इ
का
ई

5 छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

भगवती लाल सेन

छत्तीसगढ़ का वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक परिवेश अपनी अलग ही छवि प्रस्तुत करता है। यहाँ की लोक कलाएँ, लोक संस्कृति और लोक परम्पराओं से समृद्ध जीवन जीते हुए अपनी मुस्कान बिखेरने वाले स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी छत्तीसगढ़ी मनखे की एक अलग ही छवि और छाप हर मन में उभरती है। छत्तीसगढ़ की भाषा, साहित्य, कलाओं और लोक परम्पराओं की विशिष्टताओं से परिचित कराकर उनके प्रति सराहना का भाव बच्चों में विकसित करना इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है। छत्तीसगढ़ी की अपनी मिठास और कथन भंगिमाओं से विद्यार्थी परिचित होंगे और अपने भाव तथा अनुभव के साथ साहित्य की इन विधाओं से जुड़ भी पाएँगे।

इस इकाई में शामिल पद्य पाठ 'ये जिनगी फेर चमक जाए' हमें नकारात्मक भावों को त्याग कर सकारात्मकता को अपनाने का बीज हमारे मनोभावों में रोपित करता है। पाठ में बेहतर जीवन जीने के सूत्र छिपे हुए नजर आते हैं।

कहानी 'मरिया' को इस इकाई के दूसरे पाठ के रूप में सम्मिलित किया गया है। कहानी में मृत्युभोज की परंपरा के औचित्य पर प्रश्न उठा कर इसे समाप्त करने की प्रेरणा को प्रोत्साहित किया गया है। इस तरह की रुढ़ परम्पराएँ व्यक्ति को हानि पहुँचाकर समाज को प्रगति की राह से पीछे ढकेलने का काम करती हैं और आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति को अधिक संकटग्रस्त बनाती हैं। कहानी इसी निष्कर्ष को हमारे सामने रखती हुई नजर आती है।

इस इकाई का पाठ तीन 'शील के बरवै छंद' छत्तीसगढ़ी के चर्चित कवि शेषनाथ शर्मा 'शील' द्वारा 'बरवै छंद' में रचित पाठ है । विद्यार्थी इस पाठ के द्वारा एक नए छंद और उसकी विशिष्टताओं से परिचित होंगे। भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रचलित इस छंद में स्त्री के मनोभावों, विशेष रूप से विवाह के पश्चात विदाई के अवसर पर, ससुराल में रहकर मायके की मधुर स्मृतियों में डूबने और मायके पहुँचकर ससुराल को याद करने का श्रृंगारिक चित्रण है। छंद की भाषा और लयात्मकता से परिचित होकर बच्चे नारी मन की कोमल संवेदनाओं से जुड़ सकें इस तरह का प्रयास इस पाठ में है ।

यह इकाई छतीसगढ़ी भाषा और साहित्य की भावगत विशिष्टताओं से परिचित कराते हुए साहित्यिक सरोकारों और मधुरता का आस्वाद कराती है ।